



पूजा गुप्ता

ग्रीष्म ऋतु की शाम वैसे भी विरक्त और तन्हा और अकेली होती है, लेकिन उस शाम प्रचंड लू के थपेड़ों ने छह बजे के बाद भी शाम को काफी गर्म और उजाड़ बना रखा था। बिना कारण के खिड़की के पास में खड़ा अक्षय दूर थके हारे डूबते सूरज को निहार रहा था। उसने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उसे अपने ही घर में इस तरह के एकाकीपन का सामना करना पड़ेगा।

वो अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। माता-पिता दोनों उसे बेहद प्यार करते थे, पर वह माँ से ज्यादा पिता का दुलारा था। पिता उसकी हर बात का ख्याल रखते। घर पर रहते तो उसके आस-पास ही मंडराते रहते। जब अक्षय कभी बीमार हो जाता पिताजी की ऐसी रट लगाता कि सैकड़ों काम छोड़ उसके पिताजी को छुट्टियां लेकर उसके पास रहना पड़ता। बड़ा होने पर भी उसके हर काम में पिताजी-पिताजी करने से माँ अक्सर खीज जाती थी।

"कभी तो कोई काम अपनी मर्जी से किया करो। हर समय जब देखो पिताजी-पिताजी को ही बुलाते रहते हो।"

लेकिन वह कहाँ समझने वाला था? पिता तो उसके आदर्श गुरु और अभिन्न मित्र थे। वही पिता आज उसके लिए इतने बेगाने हो गए थे कि पूरा एक हफ्ता गुजर जाने के बाद भी दो-चार औपचारिक के बातों के सिवाय उन दोनों के बीच अन्य कोई बातें नहीं हुई थी। पिताजी कुछ पूछते भी तो वह चुप और एकदम निराश हो जाता। उसकी निराशा के आगे उसके पिता भी विवश थे। ये सब घटित हो रहा था उस माँ के इस दुनियां से चले जाने के बाद, जिनके जिंदा रहते कभी वह उनका मूल्य समझ नहीं पाया। सहज ही उपलब्ध माँ का प्यार, अब दुर्लभ बन जाने से उसे तरसा रहा था, तड़पा रहा था।

अचानक उसकी नजरें नीचे बगिया में बैठी उन शकुंतला देवी पर गई जो उसकी माँ कही जाती थी और जिनके कारण पिता-पुत्र में युद्ध की स्थिति आ खड़ी हुई थी। दोनों के रिश्ते अलग होने के कगार पर पहुंच गए थे।

पिता विष्णु कांत चाहते थे कि अक्षय शकुंतला देवी को अपनी माँ का दर्जा दे, लेकिन उसने भी ठान लिया था कि वे चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, वह शकुंतला देवी को अपनी माँ की जगह कभी नहीं देगा, उसके पापा या किसी और के कहने मात्र से रिश्ते नहीं बन जाएंगे। रिश्ते को बनाने और निभाने के लिए आपसी विश्वास और भावनात्मक लगाव का होना बहुत जरूरी है और उसे नहीं लगता कि इस जन्म में वह अपनी इस माँ के साथ कोई ऐसा रिश्ता बना पाएगा।

अचानक उसके मन में अपनी दिवंगत माँ नंदा देवी की स्मृति मुखर होने लगी और ना चाहते हुए भी वह उसका मन अतीत के गलियारों में फिर भटकने लगा। वह दस वर्ष का था, जब डॉक्टरों ने जांच पड़ताल के बाद उसकी माँ को कैसर बताया था, जो अंतिम अवस्था में था। डॉक्टरों के अनुसार ज्यादा से ज्यादा वे कुछ महीनों की मेहमान रह गई थी। अचानक इस सूचना से पिता-पुत्र दोनों स्तब्ध रह गए। यह वेदना दोनों के लिए असहनीय थी, फिर भी अपने दिल की वेदना को अक्षय पिता के साथ-साथ अपनी माँ से छुपाने का भरसक कोशिश करता रहा, लेकिन इस जानलेवा बीमारी की बात ज्यादा दिनों तक उनसे छुपी नहीं रह सकी। इस खबर ने माँ को मानसिक रूप से पूरी तरह तोड़ दिया था। एक दिन बर्दास्त करते-करते वो जिंदगी की लड़ाई हार गई और स्वर्ग सिधार गई।

उसके पिता नंदा देवी के जाने से से पूरी तरह टूट कर बिखर गए। माँ के बाद उसकी देखभाल पिता के कंधों पर आ गई। लेकिन उन दोनों के जीवन का सूनापन बढ़ता जा रहा था। हर समय चेहरे पर थकान और उदासी की गहरी लकीरे

पिता को असमय ही बूढ़ा बना रही थी। उस छोटी सी उम्र में भी वह पिता के दुःखों को भरसक कम करने की कोशिश करता। उनके पास ही सोता। फिर भी वह महसूस करता है कि भले ही पिता उसके पास लेटे रहते हो पर निष्प्राण शरीर की तरह उनका मन तो कहीं न कहीं टूट चुका था।

धीरे-धीरे जीवन की भागदौड़ और बदलते समय ने दोनों को बहुत कुछ सामान्य बना दिया था। देखते-देखते पंद्रह साल गुजर गए। वह कई परीक्षाओं को पास कर डॉक्टर की पढ़ाई करके दिल्ली आ गया। जहां नए माहौल में अपनी डॉक्टरी में वह पूरी तरह रम गया। उधर रायपुर में उसके पिता भी कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ शिक्षा के कामों में पूरी तरह व्यस्त हो गए थे।

कभी-कभी माँ की यादें उसे पूरी तरह बिखेर देती थी। फिर भी अब जीवन पूरी तरह सामान्य हो चला था। अक्षय घर लौटने की तैयारी ही कर रहा था कि पिता का एक पत्र उसे मिला, उसमें उन्होंने लिखा था वह किसी शकुंतला देवी से शादी कर चुके हैं, जो अब उसकी नई माँ है।

पत्र पढ़ते ही अक्षय गुस्से से सुलग उठा। घृणा और दुःख के आवेग से कांपते अपने शरीर का संतुलन बनाना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। अपनी सिसकियों को अपने अंदर जप्त कर जाने कब तक वह यूँ ही निःशब्द रोता रहा। पिता का फोन बार-बार आता रहा पर एक बार भी वह उनसे बात नहीं कर पाया। अपनी विवशता को गठरी में बांध फोन बंद कर सोने की कोशिश करने लगा, पर रात भर अपनी दिवंगत माँ की यादों में वो बिलख-बिलख कर रोता रहा।

गर्मी की छुट्टियां शुरू हो गई थी हॉस्टल करीब करीब खाली हो गया था। काफी सोच-विचार के बाद मन में घृणा, दुःख और प्रतिशोध को दिल में दबाकर वह घर के लिए निकल पड़ा था। घर पहुंचते ही दरवाजे पर उसका सामना ४२-४६ वर्षीया महिला से हो गया। जो पूर्ण व्यक्तित्व सादगी और शालीनता से भरी दिखाई दे रही थी।

देखते ही वह समझ गया यही उसकी नई माँ शकुंतला देवी है। ना जाने क्यों उन्हें देखते ही उसका सारा गुस्सा और प्रतिशोध की भावना मन में अदृश्य हो गई।

रामू काका से अक्षय का परिचय पा, जो सहजता और आत्मीयता उसके व्यवहार में दिखा, उसमें सौतेलेपन की कोई झलक नहीं दिखाई दी। रामू काका को उसका सामान अंदर रखने और चाय बना लाने के लिए वह जैसे ही उसकी तरफ मुड़ी अक्षय यह सोच कर कि कहीं अपनी इस सौतेली माँ के सामने में कमजोर न पड़ जाए, अपने गुस्से को अपनी चुप्पी से प्रकट करता अपना सामान उठाएं कमरे में आ गया।

उसका चाय नाश्ता रामू काका उसके कमरे में ही ले आए। जब तक वह नहा धोकर बाहर आया, उसके पिता भी आ गए। जैसे ही उन्हें अक्षय के आने का पता चला, बिना एक पल गंवाये वो उसके कमरे में जा पहुंचे। उनके चेहरे पर वही चिर-परिचित मुस्कराहट थी, जैसे कहीं कुछ बदला ही ना हो। पर अक्षय के अंदर तो एक उथल-पुथल मची हुई थी। पिता का चरण स्पर्श करते हुए पहली बार उसके हाथ कांप रहे थे और आंखें छलक आई थी। उसकी नम और आहत नजरों की शिकायतों ने भी पिता को कहीं गहरे तक आहत कर दिया था। वह उसकी पीठ थपथपाते उसके करीब आकर बैठ गए। अब तक बना संयम बांध तोड़कर वह निकला। अचानक ही वह पिता के कंधे पर सिर रखकर फूट-फूटकर रो पड़ा। उसके पिता की आंखें भी भर आई थी। थोड़ी देर तक रो लेने के बाद जब अक्षय का मन हल्का हो गया, पिता ने अपनी बातें शुरू की, "तुम यह कैसे बच्चों-सा बर्ताव कर रहे हो? तुम्हारी नई माँ के आ जाने से तुम्हारे लिए यहां कुछ भी नहीं बदला है, ना तुम्हारे पिता और ना ही तुम्हारा यह घर। मैंने तो इस सूनसान घर को फिर से हरा-भरा करने की कोशिश की है। इस शादी से तुम्हारी दिवंगत माँ की यादें मिटी नहीं है, वह तो मरने के बाद भी इस घर के कण-कण से जुड़ी हुई है।

पिता कुछ देर के लिए रुके, वह मौन साथे प्रतिक्रियाविहीन बैठा रहा। "यह सही है कि किसी अपने के इस दुनियां से चले जाने पर उसकी जगह कोई दूसरा नहीं ले सकता। फिर भी कोई किसी के जीवन में कितना ही सुंदर स्थान क्यों ना रखता हो, उसके चले जाने से जिंदगी नहीं रुकती। मैं यह नहीं कहता कि अतीत की सुखद यादों को मिटा सिर्फ वर्तमान को ही जियो, पर हमेशा ही कोई आदमी अतीत से चिपका, दुनियां की खुशियों से दूर अकेलेपन भरी जिंदगी नहीं जी सकता।

सहसा ही वह बीच में बोल उठा था, "पिताजी पूरे पचास की उम्र में आप... लोग क्या कहेंगे?"

" जिसे तुम पिता की विलासिता और निर्लज्ज मर्यादाहीन आचरण समझ शर्मसार हो रहे हो, दरअसल ऐसी कोई बात है ही नहीं। दुनियां के साथ चलने और अपने सुख-दुख बांटने के लिए हर आदमी को एक भावनात्मक साथ और सहारे की जरूरत होती है। तुमने कभी सोचा तुम्हारी माँ को खो देने और तुम्हारे अपनी ही दुनियां में रच-बस जाने के कारण मैं कितना अकेला और असहाय हो गया हूँ? वैसे भी इस शादी को करने का फैसला, एक तो जीवन का अकेलापन दूर करना और दूसरा जो सबसे बड़ा कारण था, वह था मृत्युशैया पर पड़े एक वृद्ध व्यक्ति को मुक्ति प्रदान करना।"

" मैं तो आज तक यही समझता रहा कि तुम मुझे सबसे ज्यादा जानते हो, पर मेरे द्वारा उठाए गए इस कदम ने तुम्हें ही मुझसे दूर कर दिया। मैं सब कुछ सहन कर सकता हूँ, पर तुम से दूरी नहीं।"

बोलते-बोलते उनका गला रुंध गया। अक्षय की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी, पिता का वात्सल्य और प्यार उसके लहलुहान छाती पर जैसे मरहम लगा दिया। फिर भी दोनों पिता-पुत्र के बीच शांति छाई रही।

" सुनो बेटा अब तुम आराम करो, शेष बातें बाद में करेंगे।" इतना बोलने के साथ ही पिता उठकर वहां से चले गए थे।

रात को दो बजे तक अक्षय यूं ही करवटें बदलता रहा। उसकी आँखों से नींद लगभग गायब हो चुकी थी। दूसरे दिन अक्षय देर से उठा। जब हाथ-मुंह धो कर नीचे आया तो रामू काका से पता चला कि उसके लिए खाना बना टेबल पर रख उसकी नई माँ और पिता दोनों कॉलेज चले गए हैं।

वह खाना खाने बैठा तो सारे खाने उसके पसंद के बने थे। उसने अभी खाना ही शुरू ही किया था कि रामू काका उसके बगल में आ खड़े हुए। "एक बात कहूँ बेटा? इसे छोटा मुंह और बड़ी बात मत समझना। यह जो तुम्हारी नई माँ है शकुंतला बिटिया, बड़े अच्छे स्वभाव की है। मैं इसे बचपन से ही जानता हूँ। यह रमन बाबू की इकलौती बेटी थी जो बड़े कपड़े व्यापारी थे। ये तो जन्म से ही दुर्भाग्यपूर्ण जीवन जीती आई है। छह साल की थी, जब मां स्वर्ग सिधार गई। शादी हुई तो महीना भर बाद ही एक दुर्घटना में पति की मौत हो गई। ससुराल वालों ने अभागन कह कर मायके पहुंचा दिया। तब से यह अपने पिता के पास ही रह रही है। यही उसने अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी की। शुरू से ही कुशाग्र बुद्धि तो थी ही, पढ़ाई समाप्त करते-करते तुम्हारे पिताजी के कॉलेज में ही उसे नौकरी मिल गई।

पहले तो उसके पिता ने उसकी दूसरी शादी के लिए नहीं सोचा, लेकिन जब लंबे समय तक बीमार रहने के बाद उन्हें अपना अंतिम समय स्पष्ट नजर आने लगा, तब सभी आने-जाने वालों के आगे बेटी की शादी के लिए मित्रते करने लगे। जब तुम्हारे पिताजी इंसानियत के नाते उन्हें देखने गए तो उनका हाथ पकड़ अपनी बेटी से शादी कर लेने के लिए मित्रतें करने लगे। एक मरते हुए आदमी की अंतिम इच्छा का अनादर तुम्हारे पिता नहीं कर सके और यह शादी उन्हें करनी पड़ी। मेरा तुम से अनुरोध है कि शकुंतला बिटिया को

माँ के रूप में अपना लो, बड़े दुःख से जीवन जी है। आगे तुम्हारी इच्छा, तुम खुद समझदार हो।"

रामू काका की बातें खत्म होते ही वह बिना कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किए वहाँ से चुपचाप चला गया।

एक दिन वह घर के मंदिर में बैठा रहा। अचानक जलता हुआ दीपक जाने कब उसकी कमीज के कोने से जलने लगा। वो चिल्ला-चिल्ला कर मदद की गुहार लगाने लगा वह जलन से तड़प उठा। उसकी चीख सुनते ही उसकी नई माँ पल भर में दौड़ती आ गई। स्थिति का आभास होते ही वह बुरी तरह घबरा गई। इससे पहले कुछ अनहोनी होती वो भाग कर सामने पड़े कालीन को उठा कर अक्षय के ऊपर डाल कर आग बुझा देती है और उसकी कमीज हटा देती है और जल्दी से अपना आंचल फाड़ कर ठंडे पानी में भिगो उसके शरीर पर लपेट देती है रामू काका को मरहम लाने के लिए बोल वह अक्षय का हाथ थामे एक तरह से खींचती हुई मंदिर से बाहर ला उसके शरीर के घाव पर दवा लगाने लगती है। साथ ही उसे डांटते भी जा रही थी। वह चाह कर भी उसका विरोध नहीं कर पा रहा था। ना जाने क्यों उनका वात्सल्य रूपी स्पर्श और डांट उसे अपनी दिवंगत माँ की याद दिला गई।

उस दिन के बाद से वे भले ही चुप रहता था, पर वह उनके प्रेम, अपनेपन और निश्चल स्वभाव का कायल हो गया था। उसे आए हुए पूरे दो हफ्ते गुजर गये थे। इस दौरान वह हमेशा देखता कि खाली समय में उसकी नई माँ खामोशी से उदास बैठी अनंत आकाश में चाँद को निहारती रहती। पिताजी भी उससे सहमे रहते और देर रात को घर लौटते।

अक्षय को लगा घर में जो एक चुप्पी छाई है उसका जिम्मेदार कहीं ना कहीं वह खुद ही है। अपनी माँ को वह खुद भी बहुत प्यार करता था। उन्हें भूलना उसके लिए आसान नहीं था। वो सुखी था किसी ना किसी तरह। फिर क्यों चाहता है कि पिता उसकी दिवंगत माँ की यादों को सीने

से लगाए अपने जीवन की उदासियों और आंसुओं में अकेलेपन के दंश को सहते रहे। पचास की उम्र कोई जीवन का अंतिम पड़ाव नहीं होता। पिता को भी तो खुशी-खुशी जीने का हक है।

उसने खिड़की से झाँक कर नीचे देखा तो अभी भी उसकी नई माँ आकाश में नजरें गड़ाए उदास होकर चाँद को देख रही थी। उन्हें देख पहली बार उसका मन पछतावा से भर उठा। क्या कमी है उसकी नई माँ में? क्या गलती है उनकी, जो वह इस कदर उनका विरोध कर, सबको तनाव में डाले हुए हैं? उनके प्रति मन में प्रति आक्रोश की श्रृंखलाएँ जैसे किसी चट्टान से टकराकर बिखर गई। वह बिना समय गवाएँ नीचे आ गया उनके पास जाकर बैठ गया। फिर धीरे से बोला "साँरी माँ क्या अब तक की गई मेरी सारी नादानियों के लिए मुझे क्षमा कर मुझे पश्चात्ताप करने का मौका देंगी? मैं आपके साथ बहुत गलत व्यवहार करता रहा, मुझे बहुत पछतावा हो रहा है कि मैं आपकी भावनाओं और प्यार को समझ नहीं पाया। माँ मुझे माफ कर दो।"

उसके व्यवहार से अचंभित, और आनंद मिश्रित स्निग्ध दृष्टि से नई माँ उसे निहारने लगी। उनका मलीन चेहरा खुशी से खिल उठा। अक्षय के कम्पित हाथों को थामते ही कई दिनों से मन में उमड़ते-घुमड़ते आंसू आँखों से बहने लगे। उनके आंसू पोंछ थोड़ी ही देर में अपनी बातों से अक्षय ने अपनी नई माँ से अच्छी दोस्ती कर ली। जब उसके पिता घर आए तो दोनों मां-बेटे को दोस्तों की तरह घुल-मिल कर बातें करते देख पहले तो आश्चर्यचकित हुए, फिर धीरे से वह भी शामिल हो गए उनके बीच। वर्षों बाद उस घर में घर के सदस्यों की हंसी और खुशी से घर की दीवारें दिवाली के दिव्यों की तरह जगमगा उठी थी।

मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल फोन - 7007224126